International Journal of Applied Research 2017; 3(8): 612-614

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(8): 612-614
www.allresearchjournal.com
Received: 29-06-2017
Accepted: 30-07-2017

Dr. Kripa Rani Kalpalliwar
Pandit Ravishanker Shukla University, Raipur, Chhattisgarh, India

Correspondence
Dr. Kripa Rani Kalpalliwar
Pandit Ravishanker Shukla University, Raipur, Chhattisgarh, India

छत्तीसगढ़ के विभिन्न महत्वपूर्ण राजवंश

Dr. Kripa Rani Kalpalliwar

प्रस्तावना

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से छत्तीसगढ़ एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। आज का यह उपेक्षित छत्तीसगढ़ किसी समय संस्कृति और सभ्यता का पुनित केन्द्र था। स्पष्ट कहा जाए तो आदिकालीन मानव सभ्यता इसी वन्य भू–भाग में पनपी थी। वर्तमान छत्तीसगढ़ अर्थात् महाकोसल मनुष्य जाति की सभ्यता का जन्म स्थान है। छत्तीसगढ़ में विभिन्न युगों के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की राजनीति एवं प्रशासनिक प्रभावों का उल्लेख मिलता है। भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण राजवंशों का या राजनैतिक घटनाओं का यहां आंशिक रूप में ही, सही पर प्रभाव पड़ता रहा। यघपि प्राचीन काल से मध्यकाल तक के यहां के राजनैतिक घटनाओं का प्रमाणित विस्तृत विवरण अप्राप्य है। आधुनिक युग में भी अंग्रेज लेखकों, यात्रियों एवं प्रशासकों का एक पक्षयुक्त दृष्टिकोण से संबध्द विवरण, पुस्तकों में व यहां के प्रतिवेदनों में मिलता है। फलतः प्राप्य सामग्री के आधार पर यहां के इतिहास को दो भागों में बांट सकते हैं। प्राचीन छत्तीसगढ, अर्वाचीन छत्तीसगढ़। मध्यकाल में यहां पर शक्तिशाली हैहयवंषी राजाओं का स्वतंत्र प्रभुत्व था।

छत्तीसगढ़ अंचल पर्याप्त विस्तृत है, किन्तु इसका गौरवपूर्ण इतिहास बहुत दिनों तक दबा पड़ा रहा है। दण्डकारण्य, महाकांतार, दक्षिण कोसल नाम से अभिहित क्षेत्रों का समन्वित रूप प्रायः आज के छत्तीसगढ़ के नाम से जाना जाता है। यहां पर शैल चित्रों में अपने अभिव्यक्ति करने वाले प्रागैतिहासिक काल के आदि मानवों से लेकर 12 वीं शताब्दी के मध्य में ताम्रपत्रों के माध्यम से शासनादेश प्रसारित करने वाले शासकों तक के जो अभिलेखीय प्रमाण मिलते हैं, उनके अनुसार छत्तीसगढ़ में महाजनपद युग से लेकर कलचुरि कालीन शासकों तक प्राप्त अभिलेखीय एवं मौद्रिक प्रणाली से मौर्यवंश, शुंग, सातवाहन, गुप्त, राजर्शितुल्य कुल, शरभपुरीय, नलवंश, पांडु सोम एवं कलचुरि वंश प्रमुख थे।

मौर्य वंश (ईसा पूर्व 100 से 200 वर्ष तक)

छत्तीसगढ़ के ईसा पूर्व के इतिहास को कमानुसार विभाजित करने का कार्य प्राप्त मुद्राओं एवं मुर्तियों की लिपियों के आधार पर सर्वप्रथम पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय ने किया था। मौर्य युगीन सम्राटों में चन्द्रगुप्त प्रथम की सेना में आटविकजन अधिक संख्या में थे। ऐ आटविक मध्यप्रदेश के आटविक राज्यों (महाकान्तार, बस्तर) के निवासी थे। इससे छत्तीसगढ़ में मौर्यों के प्रभुसत्ता विस्तार का अभास होता है। मौर्य सम्राट अशोक की कलिंग विजय इतिहास विख्यात घटना है। प्राचीन काल में उत्तरप्रदेश से कलिंग का मार्ग छत्तीसगढ़ से ही होकर गया था। मल्हार में भी उत्खनन के पश्चात् मौर्यकाल से लेकर 13 वी. शताब्दी तक के प्राचीन इतिहास के महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आये हैं। ईसा पुर्व 300 के आस पास के मौर्यकालीन चांदी के सिक्के रायपुर जिले के तारापुर तथा सारंगगढ़ और बिलासपुर जिले के अकलतरा में प्राप्त हुए हैं।

सातवाहन वंश (ईसा पूर्व 70 से ईसा की दूसरी शताब्दी)

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर भारत में शुंग और दक्षिण भारत में सातवाहन राज्य की स्थापना हुई। छत्तीसगढ़ क्षेत्र का अधिकांश भू–भाग सातवाहनों के प्रभाव क्षेत्र में था। सातवाहन राजा अपीलक की एकमात्र ज्ञात मुद्रा रायगढ़ जिले के बालपुर नामक स्थल से प्राप्त हुई। चीनी यात्री युवांन–च्वांग का कथन है – प्रसिध्द दार्शनिक नागार्जुन दक्षिण कोसल की राजधानी के निकट स्थित बिहार मे रहता था। उस समय वहां का राजा सातवाहन था। इस कथन की पुष्टि सक्ती के निकट स्थित ऋषभ तीर्थ से प्राप्त शिलालेख से भी होती है। जिसमें कुमार वरदत्त नामक सातवाहन राजा का उल्लेख है। इसी काल का काश्ठ स्तंभ लेख बिलासपुर जिले के किरारी नामक स्थल से प्राप्त हुआ है। इन सबके अधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि सातवाहनों का छत्तीसगढ़ से संबंध अवश्य रहा होगा। छत्तीसगढ़ के अनेक स्थानों से तांबे के आयताकार सिक्के

प्राप्त हुए हैं। जिनमें एक ओर हाथी और दूसरी ओर स्त्री अथवा नाग का अंकन है। संभवतः ये सिक्के सातवाहनों के अनुकरण में चलाये गये थे। कुछ समय पूर्व मल्हार ग्राम (बिलासपुर जिला) में उत्खनन में द्वितीय मौर्यकाल (मौर्य, सातवाहन, कुषाणकाल) से प्राप्त मिट्टी की एक मुहर में वेदसिरिस (वेदश्री) लेख मिलता है।

मेघवंश

सातवाहनों के पश्चात् छत्तीसगढ़ में मेघ नामक वंश ने साम्राज्य विस्तार किया। पुराणों के विवरण से ज्ञात होता है, कि गुप्तों के उदय के पूर्व कोसल में मेघवंश के 9 राजा राज्य किये। इन राजाओं को बुद्धिमान और मेधा से युक्त कहा गया है। ऐसा प्रतीत होता है, कि इन राजाओं ने द्वितीय शताब्दी से लेकर चतुर्थ शताब्दी ई. तक राज्य किया होगा। इन राजाओं के विषय में इससे अधिक कोई जानकारी नही मिलती, न ही अब तक कोई पुरातात्विक साक्ष्य मिले हैं।

वाकाटक वंश (ईसा की तीसरी और चौथी शताब्दी)

सातवाहनों की शक्ति क्षीण होने के पश्चात् दक्षिण भारत में वाकाटक राज्य की स्थापना हुई। वााकाटक नरेश पृथ्वीसेन द्वितीय व उसके पिता नरेन्द्रसेन का संघर्ष बस्तर कोशपुर क्षेत्र में राज करने वाले नल शासकों से होता रहा। नल शासक भवदत्त वर्मा ने नरेन्द्र सेन की राजधानी नंदिनवर्धन पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था, किन्तु उसके पुत्र पृथ्वीसेन द्वितीय ने इसका बदला लिया था और भवदत्त के उत्तराधिकारी अधिपति की मृत्यु हो गयी थी। कालान्तर में वाकाटक वंषी वत्सगुलाम शाखा के शासक हरिषेण ने छत्तीसगढ़ क्षेत्र में अपना अधिकार स्थापित किया था। इस वंश का प्रवरसेन का एक ताम्रपत्र दुर्ग के 'मोहल्ला' ग्राम में प्राप्त हुआ है।

गुप्त वंश

गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त की प्रयागप्रशस्ति से ज्ञात होता है, कि उसने दक्षिण कोसल के राजा महेन्द्र को पराजित किया था, किन्तु महेन्द्र के वंश उत्तराधिकारियों के विषय में कोई जानकारी नहीं मिलती है। लेकिन दुर्ग जिले के बनाबरद नामक स्थल से सन् 1972 में 20 गुप्त स्वर्ण मुद्राओं की प्रापंति तथा यहां के अभिलेखों में गुप्त संवत् के प्रयोग से स्पष्ट है, कि यहां गुप्तों की अधिसत्ता स्थापित हो गयी थी। इसके अलावा आरंग से 5 वीं सदी का रजत जड़ित तांबे का कुमार का सिक्का प्राप्त हुआ है।

राजर्शितुल्य कुल वंश (ईसा की पांचवी शताब्दी)

रायपुर जिले में (आरंग) वीरसेन द्वितीय का एक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है। जिससे ज्ञात होता है, कि ई. सन् से 5 वीं शताब्दी के लगभग छत्तीसगढ़ में राजर्षितुल्य कुल नामक कोई राजवंश राज्य करता था। इस ताम्रपत्र के अनुसार इस वंश का प्रथम शासक षूर(षूरा) था। तत्पश्चात् क्रमशः दयित प्रथम, विभीषण, भीमसेन प्रथम, दयित वर्मा द्वितीय और भीमसेन द्वितीय इस ताम्रपत्र का नायक था ने राज्य किया। इन ताम्रपत्रों में गुप्त संवत् के प्रयोग से स्पष्ट होता है, कि इस वंश के शासक गुप्त अधिसत्ता को स्वीकार करते थे।

नल वंश (अनुमानतः ईसा की तीसरी से 5 वीं शताब्दी तक)

नल वंश शासकों की शक्ति का मुख्य केन्द्र बस्तर तथा बस्तर के उड़ीसा से लगे सीमा के आसपास का क्षेत्र था। कुल मिलाकर 5 उत्कीर्ण लेख और थोड़े से सोने के सिक्कों के आधार पर ही नल वंश की क्रमानुगतिता का किंचित अनुमान कर सकते हैं। इन पांच लेखों में दो उड़ीसा में प्राप्त हुए हैं शेष तीन में एक अमरावती, एक पोड़ागढ़ तथा राजिम में प्राप्त हुए हैं। राजिम प्रस्तर अभिलेख से नलवंशी तीन शासकों पृथ्वीराज, विद्वपराज और विलासतुंग का पता चलता है। भीमसेन इस वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक था।

शरभपुरीय वंश (ईसा की पांचवी और छठवीं शताब्दी)

इस वंश का संस्थापक शरभ था इसकी राजधानी शरभपुर थी। शरभ का उत्राधिकारी नरेन्द्र हुआ। जिसके शासन काल के दो ताम्रपत्र प्रथम पिपरदुला एवं द्वितीय कुरूद से प्राप्त हुए हैं, जो उसके राज्य काल के 24 वें वर्ष में प्रसारित किया गया था। इसके पश्चात् प्रसन्न मात्र नामक प्रतापी शासक हुआ। इस वंश का अंतिम शासक प्रवरराज था जिसकी राजधानी श्रीपुर थी। इस तरह लगभग छठवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में पाण्डुवंशियों ने दक्षिण कोसल की विजय कर षरभपुरीय राजवंश को समाप्त किया और श्रीपुर को अपनी राजधानी बनाया।

पाण्डुवंश

इस वंश का प्रथम शासक उदयन था । इस वंश का प्रभावशाली राजा महाशिव तीवरदेव था। पाण्डुवंशी शासनकाल (लगभग 550 ई. से 7 वीं शताब्दी के अंतिम चरण) सर्वागीण चरमोत्कर्ष के कारण छत्तीसगढ़ का स्वर्ण युग कहलाता है। इस वंश के शासक महाशिवगुप्त बालार्जुन के कुछ ही समय पश्चात् कोसल के नलवंशी राजाओं ने इस वंश को समाप्त कर अपना राज्य स्थापित किया तथा उनका राज्य तब तक चला, जब तक वे उत्तरकालीन सोमवंशियों द्वारा पराजित नहीं किये गये।

बाण वंश

दक्षिण कोसल (छत्तीसगढ़) में पाण्डुवंशी सत्ता की समाप्ति में बाणवंशीय शासकों का भी योगदान था। बाणवंशी शासकों का काल 870 से 895 ईं. तक माना गया है। रतनपुर से 18 किलोमीटर दुर पाली नामक स्थल के मंदिर के गर्भगृह के द्वार में उत्कीर्ण लेख से ज्ञात होता है, कि इस मंदिर का निर्माण महामण्डलेष्वर मल्लदेव के पुत्र विक्रमादित्य द्वारा किया गया था।

सोमवंश

कोसल का पाण्डुकुल सोमवंशी भी कहलाता था, किन्तु पश्चातवर्ती काल में एक ऐसे राजवंश की स्थापना हुई जो सोमवंशी होते हुए भी अपने को पाण्डुकुल का नहीं बताता था। इस वंश की राजाओं की उपाधि तिकलिंगाधिपति थी। उधोतकेसरी इस वंश का अंतिम महान् सम्राट था। इस समय तक त्रिपुरी के कलचुरियों की लहुरि शाखा छत्तीसगढ़ (राजधानी तुम्माण) में स्थापित हो चुकी थी जिन्होंने सोमवंश को सदा के लिए समाप्त कर दिया।

कर्वधा का फणिनागवंश

कवर्धा से 16 किंमी. दूर चोरा ग्राम के निकट मंडवा महल नामक मंदिर से विक्रम संवत् 1406 अर्थात् 1349 ई. का शिलालेख मिला है जिसमें अहिराज को इस वंश का प्रथम शासक बताया गया है तथा लगभग दो दर्जन राजाओं के नाम दिये गये हैं जो इस वंश में राज्य करते थे। यह राजवंश रतनपुर के कलचुरियों की अधिसत्ता स्वीकार करता था। मण्डवा महल और भोरमदेव के मन्दिर इस वंश की कला के अनुपम उदाहरण हैं।

चक्रकोट के छिंदकनाग वंश

बस्तर जिले से प्राप्त कुछ अभिलेखों से ज्ञात होता है, कि ग्यारहवीं शताब्दी ई. के प्रारंभ में बस्तर में नागवंशीय राजाओं ने अपने राज्य की स्थापना की जो रतनपुर के कलचुरियों के प्रतिद्वन्द्वी थे। इस समय बस्तर क्षेत्र के चक्रकोट के नागवंशी नरेश स्वयं को कश्यप गोत्रीय एवं छिंदककुल के मानते थे। छिंदकों के प्रथम राजा नृपति भूषण का उल्लेख एर्राकोट से प्राप्त शक संवत् 945 (1023) के एक खंडित शिलालेख में मिलता है।

इस वंश के अन्य शासक जगदैग भूषण एवं मधुरांतक देव आदि हैं।

कांकेर का सोमवंश

बस्तर जिले में स्थित कांकेर से प्राप्त कुछ अभिलेखों से यहां राज्य करते हुए सोमवंशी राजाओं का पता चलता है जो रतनपुर के कलचुरि राजाओं का प्रभुत्व मानते थे। यहां से प्राप्त भानुदेव के शासन कालीन शकसंवत् 1242 (1320) के अभिलेख में भानुदेव के पूर्वजों की वंशावली दी है। तदानुसार इस सोमवंश का प्रथम राजा सिंह राज था। उसके पश्चात् व्याघ्रराज, बोपदेव, कृष्ण, जैतराज एवं सोमचंद्र राजा हुए।

कलचुरि वंश

दक्षिण कोसल(छत्तीसगढ़) के कलचुरि डाहल या चेदि की कलचुरियों के वंशज थे जिनकी राजधानी पुराना शहर त्रिपुरी (वर्तमान में जिसे तेवर, जबलपुर के निकट है कहा जाता है) थी। कलचुरि शाखा चौदहवीं शताब्दी के अंतिम समय में दो भागों में विभाजित हो गयी थी – मुख्य शाखा रतनपुर और द्वितीय लहुरिशाखा। बाबू रेवाराम के अनुसार ईसा की 15 वीं शताब्दी में रतनपुर के कलचुरि राजा जगन्नाथ सिंह के दो पुत्र हुए वीरसिंह देव और देवसिंह देव। वीरसिंह देव को रतनपुर तथा देवसिंह देव को रायपुर राज्य दिया गया। रायपुर शाखा के राजा ब्रह्मदेव के दो शिलालेख पहला रायपुर से विक्रम संवत् 1458 तथा दूसरा खल्लारी से विक्रम संवत् 1471 प्राप्त हुए हैं। ब्रह्मदेव के समय में सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य का कलचुरियों द्वारा बंटवारा हो गया एवं अंततः भोंसलों के आक्रमण पश्चात् छत्तीसगढ़ के इतिहास से कलचुरिवंशियों का शासन बड़े ही चमत्कारिक ढंग से समाप्त हो गया।

इस तरह हम देखते हैं, कि छत्तीसगढ़ के विभिन्न युगों में विभिन्न राजवंशों ने कुशलतापूर्वक शासन किया। चाहे मौर्य वंश हो या सातवाहन वंश, मेघवंश, वाकाटक वंश, गुप्त वंश, राजर्शितुल्यकुल वंश, नल वंश, शरभपुरीय वंश, पाण्डुवंश, बाणवंश, सोमवंश, कवर्धा का फणिनागवंश, कांकेर का सोमवंश एवं कलचुरि वंश इन सबका एक अपना अमिट एवं महत्वपूर्ण स्थान छत्तीसगढ़ में है। ऐ सारे राजवंश अपनी गौरवपुर्ण इतिहास एवं कुशल प्रशासन व्यवस्था के कारण आज भी विख्यात हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. झा लक्ष्मीधर – छत्तीसगढ़ का शैक्षणिक स्वरूप का विकास,पृ.55, सन् 1998
2. रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ. 574, सन् 1909
3. थर्ड सेन्चुरी रिपब्लिक इन महाकौशल – दी हितवाद, नागपुर, 6 अप्रैल 1936
4. जैन बाल चंद्र–मध्यप्रदेश का इतिहास और पुरातत्व, पृ.11 सन् 1955
5. मिराषी वासुदेव विष्णु–मध्यप्रदेष के वाकाटक वंश।
6. इंडियन हिस्टोरिकल क्वाटर्ली, वाल्यूम36, पृ. 247, सन् 1956
7. विलासतुंग का राजिम शिलालेख, पृ. 48, सन् 1903 –04
8. प्रवरराज का ठाकुरदिया ताम्रपत्र– राज्य वर्ष 3 (एपिग्राफिया इंडिका, भाग–22, पृ. 15)
9. द्विवेदी एस. डी.– छत्तीसगढ़ का स्वर्ण युग, बिलासपुर टाईम्स, पृ.02, 16 मई 1976
10. हीरालाल सूची – लिस्ट ऑफ इनस्क्रीप्सन्स इन सेन्ट्रल प्रोविन्स एंड बरार, क्रं. 305, पृ. 72, 1932